JMC
JAISHANKAR MEMORIAL CENTRE

मस्ती पाठशाला

जयशंकर मेमोरियल सेंटर
न्यूज़लेटर, अप्रैल–जून 2025

एक झलक

मुख्य कार्यक्रम
प्रेरक सत्र 2

जे.एम.सी. डायरी
कमाल का कैंप 3
कान, नाक एवं गले की जांच 4
रचनात्मकता और ज्ञान से भरपूर जेएमसी समर कैंप 4
गीष्मकालीन शिविर समापन समारोह 7

एक सफल कदम
सामाजिक संरक्षण योजना शिविर 8

सफलता की सुनी-अनसुनी बातें
Volunteer's take-aways 9

ज्ञान हमारे व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देता है।

प्रेरक सत्र

स्कूल का हमारे जीवन में क्या महत्व है और आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं। इन सवालों को लेकर जेएमसी में दिनांक 10 अप्रैल 2025 को कक्षा के नए सत्र हेतु एक मोटिवेशनल सत्र का आयोजन किया गया। इसमें जेएमसी टीम के साथ तकरीबन 50 बच्चों ने भागीदारी दी। इस सत्र को जेएमसी की हितैषी, अनुभवी और रिटायर्ड अध्यापिका श्रीमती सुचरिता जी द्वारा लिया गया।

सत्र की शुरूआत बच्चों से सवाल करते हुए किया गया कि स्कूल जाना किसे अच्छा लगता है और आप क्यों स्कूल जाते हैं, जिसका बच्चों ने बड़े ही रोचक तरीके से और मजेदार जवाब दिए। इसके बाद उनसे पूछा गया कि आप बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं तो जवाब में कोई डॉक्टर, कोई इंजीनियर, तो कोई शिक्षक बनने की इच्छा जता रहे थे। उनकी जवाबों की सराहना करते हुए इस सत्र में शिक्षा और ज्ञान के महत्व पर विस्तार से चर्चा की गई।

उन्होंने बताया कि ज्ञान क्यों आवश्यक है कैसे यह हमारे व्यक्तित्व और भविष्य को आकार देता है। इसके साथ ही जयशंकर मेमोरियल सेंटर के रेमेडियल एजुकेशन महत्व के बारे में समझाया और बताया कि यहां पर हरएक कक्षा के अलग–अलग बैच होते हैं। जिसमें अधिकतम 10 विद्यार्थी होते हैं। कम विद्यार्थी के बैच होने से विद्यार्थियों को समझने एवं अपनी समस्या का समाधान करने में आसानी होती है। बच्चों के पास यह मौका होता है कि यदि वे चाहे तो पूरे दिन एक लाईब्रेरी की तरह जेएमसी में पढ़ सकते हैं क्योंकि कई ऐसे बच्चे भी होते है जिनके पास पढ़ने की जगह का अभाव होता है। मदनपुर खादर गांव के पढ़ने वाले विद्यार्थियों के पास यह अवसर है कि वे जेएमसी में आए और पढ़ाई के साथ–साथ, खेल–कूद अपना लक्ष्य प्राप्त करने में जेएमसी का सहयोग प्राप्त करें।

आगे उन्होंने विद्यार्थियों से पूछा की स्कूलों में आप लोगों को क्या समस्या आती है?

जवाब में बच्चों ने बताया कि स्कूलों में पढ़ाया तो जाता है लेकिन जब प्रैक्टिकल की बारी आती है तो नहीं होता यह बहुत बड़ी मुश्किल है। उन्होंने कहा कि ''मुश्किल प्रश्नों से नहीं डरना चाहिए जिस चीज में कमजोर है उसी चीज को इतना करो कि वह आपकी पसदंदीदा बन जाए।'' हमें कुछ आता है तो दूसरों की मदद करनी चाहिए जिससे हमारा ज्ञान बढ़ता है। इसके बाद उन्होंने विभिन्न विषयों की उपयोगिता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

साथ ही, उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के महत्व पर विशेष जोर देते हुए बताया कि पढ़ी–लिखी महिलाएं न केवल अपने परिवार को बेहतर ढंग से संभाल सकती हैं, बल्कि समाज के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। विद्यार्थियों को अपने सपनों की ओर बढ़ने के लिए और सवाल पूछने की आदत डालने की सलाह दी और नियमित रूप से स्कूल जाने के लिए प्रेरित किया। इस सत्र में विद्यार्थियों ने जो भी सीखा उसे अपने शब्दों में व्यक्त करते हुए सुचरिता जी का धन्यवाद दिया और शिक्षकों द्वारा सुचरिता जी के मार्गदर्शन का धन्यवाद देते हुए सत्र का समापन किया गया।

आयान

आज के सत्र में मैनें सीखा कि चुनौतियों से डरकर नहीं बल्कि लड़कर जीता जा सकता है।

आशीष

मेहनत ही सफलता की कुंजी है, इसलिए हमें मेहनत करने से नहीं घबराना चाहिए।

कमाल का कैंप

22 मई 2025 को जयशंकर मेमोरियल सेंटर में प्रथम के सहयोग से कमाल का कैंप शिविर हेतु प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें जेएमसी टीम के सदस्यों के साथ स्थानीय वॉलिंटियर ने बड़े जोश के साथ हिस्सा लिया। प्रथम की टीम से मो. आरिफ और अनीता जी ने बड़े ही रोचक तरीके से इस प्रशिक्षण की प्रक्रिया को समझाया।

इस प्रशिक्षण का लक्ष्य था कि इसमें भाग लेने वाले सभी बच्चे समझ के साथ बेहतर तरीके से पढ़ने में सक्षम हों, और अपने विचारों को मौखिक और लिखित रूप में व्यक्त कर सकें। ''जल्दी शुरू करें–मजबूती से शुरू करें'' दृष्टिकोण के साथ, यह प्रशिक्षण प्राथमिक से उच्च प्राथमिक स्तर पर जाने वाले बच्चों के बीच बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ करने का अवसर प्रदान करती है। बच्चे का ध्यान न भटके और वे बोर न हो इसके लिए विभिन्न खेल भी खिलाए गए जिसका बच्चों ने खूब आनंद लिया और उनमें नई उर्जा का संचार हुआ। इस कैंप को गतिविधियों के माध्यम से जिसमें खेल, कहानी लेखन, शब्दकोष अभ्यास का समावेश था के माध्यम से किया जाना था। इस कमाल के कैम्प न केवल बच्चों लाभान्वित किया बल्कि वॉलिंटियर्स साथ जेएमसी के टीम को एक नया अनुभव भी प्राप्त हुआ।

कान, नाक एवं गले की जांच

9 जून 2025 को जयशंकर मेमोरियल सेंटर (जे.एम.सी.) और अनंता ईएनटी केयर के सहयोग से जे.एम.सी. में कान, नाक एवं गले की जांच का आयोजन किया गया।

ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. गीता कथुरिया जी ने मदनपुर खादर गांव के 22 बच्चों की निःशुल्क जांच की।

जांच के दौरान विशेष रूप से बच्चों के कान, नाक एवं गले से संबंधित समस्याओं का परीक्षण किया गया। इनमें से अधिकांश बच्चों को कान से जुड़ी समस्या थी।

जांच के दौरान पाई गई समस्याओं को लेकर डॉ. गीता कथुरिया ने उन्हें आवश्यक परामर्श और उपचार के लिए आगे की प्रक्रिया के बारे में बताया, जैसे– "कान में पानी जाने से बचाव, किसी भी चीज को कान में डालकर सफाई करने से बचना आदि।"

अनंता ईएनटी केयर की टीम, उपस्थित बच्चे एवं अभिभावकों तथा जयशंकर मेमोरियल सेंटर की टीम के सहयोग से यह शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

जे.एम.सी. तहे दिल से अनंता ईएनटी टीम का आभारी है।

रचनात्मकता और ज्ञान से भरपूर जेएमसी समर कैंप

इस साल जेएमसी के प्रांगण में 2 जून 19 जून तक विशेष समर कैंप का आयोजन किया गया जो कि बीते वर्षों के कैंप के बिल्कुल अलग था। इस कैंप में विभिन्न खेलों व शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से हिंदी भाषा सिखाने पर विशेष जोर दिया गया। इसके लिए शुरूआती प्रक्रिया में बच्चों को तीन समूहों में विभाजित किया गया। जिसमें कक्षा तीसरी से आठवीं तक के बच्चे शामिल थे। पहले समूह में वर्णों व व्यंजन की पहचान करने वाले, दूसरे समूह में शब्द बनाने वाले और तीसरे समूह में वाक्य बनाने वाले बच्चों को शामिल किया गया।

इसमें हिंदी वर्णों के साथ खेल–खेल में उच्चारण और पहचान करवाना, समूह बनाते हुए शब्द बनाना, शब्दों को जोड़ने और बोलने का अभ्यास कराया, शब्द से वाक्य बनाना और लिखना बताया। मात्राएं, शब्दों की ध्वनि और अर्थ को कैसे प्रभावित करती हैं। मात्राओं के साथ शब्द बनाना व उसका उच्चारण करना। इसे ''वर्णों की रेलगाड़ी'' गतिविधि, ''शब्दों की पकड़'', छुपे हुए अक्षरों से फलों के नाम ढूंढना आदि जैसी गतिविधियों के जरिए कराया गया। जिसमें बच्चों ने स्वर, व्यंजन के चार्ट बनाए, बारहखड़ी का चार्ट तैयार कर बच्चों ने सामूहिक प्रदर्शन दिया। वाक्यों

से कहानी लेखन भी इसका एक हिस्सा था। भाषा की बुनियादी समझ, शुद्ध उच्चारण और रचनात्मक अभिव्यक्ति में सहायता हेतु इसका उद्देश्य था। यह सब सीखते हुए एक दूसरे की सहायता करना जैसी भावना का लगातार प्रयास करना देखने को मिला।

इन सबके साथ–साथ कक्षा नौवीं और दसवीं के बच्चों के लिए भी अलग–अलग सत्रों का आयोजन जिसमें गणित के सिद्धांत, विज्ञान का सिद्धांत, भाषण और अभिव्यक्ति, सोशल मीडिया आदि किया गया।

गणित के सत्र में मनोरंजन के साथ–साथ गणित व बीजगणित के मूलभूत सिद्धांत को सरल तरीके से व उदाहरणों का उपयोग करते हुए बताया गया। इसमें समस्या–समाधान गतिविधियां, तर्क आधारित खेल और सुडोकू गतिविधि भी शामिल थी जिसके जरिए विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच जैसे कौशल विकसित करने में मदद मिलती है।

विज्ञान के सत्र की शुरूआत अल्बर्ट आइंस्टीन, आइजैक न्यूटन, डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे विज्ञानिकों के जीवन और उपलब्धियों के बारे में रोचक कहानी से की गई। बिग बैंग थ्योरी जिसमें ब्रह्मांडीय रचना के बारे में जानकारी, तत्व और आवर्त सारणी कि सभी पदार्थ तत्वों से बने हैं और कैसे

घटक मिलकर यौगिक बनाते हैं जिनका वे दैनिक जीवन में सामना करते हैं। विज्ञान और समाज जिसमें उर्जा, परिवहन, चिकित्सा शामिल है। और वैज्ञानिक प्रगति सामाजिक आवश्यकताओं को कैसे प्रभावित करती है जैसे सवाल और उनके जवाबों ने इस सत्र को और भी जीवंत बनाया।

भाषण और अभिव्यक्ति के सत्र का उददेश्य सार्वजनिक रूप से बोलने और कहानी सुनाने की क्षमता विकसित करना, ध्यान से सुनने और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करना था। इस सत्र ने युवाओं को अपने संचार कौशल का विकास और इसमें सुधार करने के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया। सभी युवाओं ने इसमें बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। न बोलने वाले छात्रों को भी इस सत्र ने बोलने पर मजबूर किया और उनमें आत्मविश्वास का निर्माण किया। इसमें की गई गतिविधियां रोचक और शिक्षाप्रद दोनों ही थीं।

सोशल मीडिया से संबंधित सत्र में बच्चों को समूह में बांटते हुए यू–टयूब, पॉडकास्ट और अन्य सोशल मीडिया प्लेटफार्म के लिए कंटेट बनाने के तरीके बताए। साथ ही एडिटिंग के लिए उपयोग किए जाने वाले ऐप्स जैसे InShot, X&Recorder आदि के प्रयोग की विधि भी बच्चों को समझाई गई। हरएक समूह को अपनी रूचि अनुसार विषय चुनकर स्क्रिप्ट तैयार करना, एडिटिंग करना और वीडियो शूट करने की विधि बताई गई। इसके बाद बच्चों ने समूह में मोबाइल की सहायता से अलग–अलग विषयों पर एक ब्लॉग बनाया। इस सत्र का उददेश्य बच्चों को डिजीटल मीडिया के प्रति जागरूक करते हुए उसका सुरक्षित उपयोग करना भी था।

इन 16 दिवसीय कैंप ने बच्चों के अंदर मानसिक, रचनात्मक, टीम वर्क, आपसी सहयोग की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ग्रीष्मकालीन शिविर समापन समारोह

20 जून 2025 को जेएमसी के प्रांगण में समर कैंप का समापन समारोह बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस समारोह के लिए जेएमसी के बच्चों ने खुद से नाटक, गीत, नृत्य और विभिन्न कविताएं अपने प्रदर्शन के लिए तैयार कीं थी। इस कार्यक्रम का बच्चे बहुत ही उत्सुकता से इंतजार करते हैं। सुबह से ही अपनी पोशाक, अपने प्रदर्शन, जेएमसी के प्रांगण को कैसे सुदंर तरीके से सजाना है इसके बारे में सोचकर वह फूले नहीं समा रहे थे। बार–बार अपने प्रदर्शन को बेहतर करना है इसके लिए जमकर तैयारी कर रहे थे।

शाम 4 बजे से इस कार्यक्रम की शुरूआत एक स्वागत गीत के साथ की गई। इस समारोह में अतिथि बतौर सरिता विहार आरडब्लयूए के अध्यक्ष कमल जी और उनके वरिष्ठ सलाहकार डा. जमाल खान जी, प्रथम की टीम से अर्शी जी, आरिफ जी, अनीता जी ने शिरकत की। जेमएसी की वाईस प्रेजिडेट विद्या राघवन जी, ट्रेशर उमा सेठ जी, फाउंडर मेंबर रविशंकर जी उपस्थित थे। रिटायर्ड अध्यापिका सुचरिता जी, लक्ष्मी जी, प्रोफेसर भरत सेठ इनके अलावा जेएमसी के अन्य हितैषी इस कार्यक्रम में बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए उपस्थित हुए। पिछले दो सालों के दौरान जेएमसी में इंटर्नशिप करने वाले विद्यार्थियों ने भी इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। एक के बाद एक पेश किए जाने वाले नृत्य, नाटक व कविताओं ने वहां उपस्थित सभी का मन मोह लिया। समर कैंप के दौरान सीखी गई गतिविधियों और कार्यों के अपने अनुभवों को भी बच्चों ने बहुत ही आत्म विश्वास के साथ रखा।

नंदिनी

इस साल का समर कैंप बहुत अलग था, इस साल मुझे समर कैंप में वॉलिंटियर बनकर बहुत कुछ सीखने को मिला। हमने इसमें बहुत कुछ नया सीखा और साथ-साथ बच्चों को सिखाया भी। इस कैंप में साईंस, गणित, इंग्लिश व हिंदी विषयों के लिए अलग-अलग लोग आकर जो नई जानकारी देते हैं मुझे बहुत ही अच्छा लगता है और मैं अपने दोस्तों को भी इसके बारे में बताती हूं।

संजना

जेएमसी का समर कैंप जिसका मैं पूरे साल इंतजार करती हूं। इसमें आकर हमें हमेशा नई चीजों के बारे में पता चलता है। आत्मविश्वास के साथ बात रखना, ये मैने जेएमसी में ही सीखा है।

सामाजिक संरक्षण योजना शिविर

दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड (डीटीएनबीडब्ल्यूईडी) के सहयोग से

जयशंकर मेमोरियल सेंटर और डीटीएनबीडब्ल्यूईडी के सहयोग से 23 जून से 26 जून तक चार दिवसीय सामाजिक संरक्षण योजना के षिविर आयोजित किए गए। यह शिविर अलग–अलग क्षेत्र में लगाए गए थे। पहले दो दिन जेएमसी में इसका आयोजन किया गया जिसमें 130 लोगों ने अपना पंजीकरण करवाते हुए कार्ड बनवाए। कार्ड व आवेदन मुख्यतः आभा कार्ड, ई–श्रम कार्ड, पीमए–जेएवाई के थे। इसमें हडडू मोहल्ला, राजस्थानी कैंप, मेहला मोहल्ला, मवासी कालोनी के लोगों ने शिकरत की। अन्य योजनाओं के लाभ के लिए भी लोगों ने जानकारी प्राप्त की।

अगले दो दिन का शिविर न्यू नेशनल पब्लिक स्कूल मदनपुर खादर में किया गया। इस शिविर में चौहान मोहल्ला, सपेरा बस्ती, प्रियंका कैंप से लोग आए और जानकारी प्राप्त कर आवेदन किए। इस दो दिन तक चले कैंप में 224 लोगों ने आवेदन किए और विभिन्न कार्ड बनवाए जिसमें आभा कार्ड, ई–श्रम कार्ड, आयुष्मान कार्ड शामिल हैं।

इन चार दिन तक चले कैंप में (डीटीएनबीडब्ल्यूईडी) के क्षेत्रीय निदेशक श्रीमान संजय कुमार जी आए और योजनाओं के लाभ के लिए लोगों का मार्गदर्शन करने में सहयोग किया।

Volunteer’s take-aways

Introduction

Volunteering at the Jaishankar Memorial Centre has been one of my most rewarding experiences. During my brief time of a fortnight here, I had the opportunity to work closely with students in Grades 7 and 8, teaching them the fundamentals of English language in a fun and easy-to-understand manner. I also had the opportunity to interact with younger children by leading a drawing session that turned out to be a delightful and energetic celebration of creativity, particularly around the theme of the environment.

What I did

1. English Classes for Grades 7 and 8: My focused mandate was to focus on teaching English to middle school students. I concentrated on fundamental grammatical ideas, simple sentence structure, vocabulary development, and understanding the text. We investigated rhetorical questions, played word games, and used narrative to enhance our understanding. To keep things interesting, I included dictation games and brief writing exercises that boosted creativity and confidence.

What jumped out at me was the children's clear enthusiasm. Many of them were ready to speak up, attempt, and engage, even if they did not know the answer. Their enthusiasm made each session feel vital and important.

However, not every child found the learning curve simple. About three to four children in the class were clearly suffering, particularly with spelling, comprehension, and expressing themselves in complete sentences. I could sense their hesitation, irritation, and the quiet retreat they would make when they could not keep up.

To assist them, I slowed the pace as needed, restated essential concepts, and attempted to clarify things with real-life analogies or pictures. I also made them feel seen and encouraged by delivering modest words of appreciation whenever they made even the smallest progress. These minor efforts helped slightly, but I feel they would benefit greatly from targeted remedial support in smaller groups. They are eager to learn—all they need is a pace that is appropriate for their requirements. I am confident that with more time, special care, and patience, these youngsters will shine just as bright.

2. Drawing Activity for Younger Children: To mark World Environment Day, I led a drawing workshop for younger children. The enthusiasm in the room was contagious! The students used vivid colours and bold lines to communicate their opinions on nature and the environment. For many of them, it was more than simply an artistic endeavour; it was a fun opportunity to interact and express themselves.

Creative Session

The drawing activity served as a reminder of the importance of allowing youngsters to express themselves creatively. It created space for self-expression and delight, and even the quietest youngsters found something to express via their work.

Final Thoughts

Volunteering here has reminded me of education's transformative power—particularly when provided with care, respect, and joy. It has taught me that tiny steps are important. Encouragement goes a long way. Each child learns at her own pace and in her own way.

This experience also provided me a better appreciation of the difficulties that certain children encounter, not just in learning a language, but also in developing the confidence to think that they can learn and that their voice is important.

I leave this experience feeling grateful—for the opportunity to teach, listen, laugh with the kids, and be a part of their learning path, however brief. I genuinely hope to continue volunteering in such spaces in the future, carrying forward the lessons that I learnt during my duration of volunteering at JMC.

Kamakshi Venkatraman
Volunteer at JMC
2nd June- 19th June

JMC Brochure

https://jmcindia.org/about-us/

From JMC to Kamakshi

Dear Kamakshi – our thanks for your diligent contribution to our Summer Camp. You made JMC a happier and fun place for so many young children here during the camp. We were extremely fortunate to have you as an intern, though we wish you could have stayed longer. Wishing you the best in your academics and for the future. Please continue to be in touch.

JMC
JAISHANKAR MEMORIAL CENTRE

Published on behalf of JMC by Geetha Ravishankar, President, Jaishankar Memorial Centre
Darshan, Plot No. 5, Institutional Area, Sarita Vihar, New Delhi - 110 076, Tel: 91 11 26955763; 2697 2743
Email: renewal.jmc@gmail.com, www.jmcindia.org

Editorial Assistance, Design & Printing by New Concept Information Systems (P) Ltd.
Project Office: Plot No. 5, Institutional Area, Sarita Vihar, New Delhi -110076
Tel.: 26972748. email: nc@newconceptinfosys.com